शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत में मुगलों का बौद्धिक योगदान : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

अमित कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
देव समाज कॉलेज फॉर वीमेन
फिरोजपुर, पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

भारत में मुगलों का आगमन अनेक परिवर्तनों की भूमिका सिद्ध हुआ। पहली बार इस्लामी सामाजिक व्यवस्था ने भारतीय उपमहाद्वीप के प्रत्येक आयाम पर व्यापक प्रभाव उत्पन्न किया। बौद्धिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में एक नयी शैली का प्रादुर्भाव हुआ जो भारत ने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था।प्रस्तुत शोध पत्र में मुगलों का भारतीयता को समझने और इसके बौद्धिक क्षेत्र में विशेष आयाम जोड़ने की प्रक्रिया का विवेचन व विश्लेषण किया गया है। इसका प्रभाव भारत के अनेक क्षेत्रों पर पड़ा और एक नवीन भारतीयता की पृष्ठभूमि निर्मित हुई जो इस्लामी व भारतीय संस्कृति के समन्वय पर आधारित थी।

मुख्य शब्द : अकबर, मुगल, अबुलफजल, बदायुनी, दारा शिकोह

प्रस्तावना

भारत की बौद्धिक विरासत को वैदिक संस्कृति और आध्यात्मिकता ने आकार दिया है। हम चाहें भी तो भारत को आध्यात्मिकता से पृथक नहीं कर सकते। भारत का शाब्दिक अर्थ ही है भा (प्रकाश), रत (संलग्न), अर्थात भारतीय वही है जो प्रकाश की दिशा में अग्रसर है। प्राचीन शिक्षा गुरुकुलों में होती थी लेकिन मध्यकाल तक आते-आते शिक्षा पर बाह्य प्रभाव पड़े और मध्यकालीन हिन्दू प्राथमिक शिक्षण संस्थान मंदिर होने लगे। उच्च शिक्षण संस्थानों को टोल, चतुष्पदी, चौ पारी कहा जाता था। यह शिक्षा व्यवस्था वस्तुतः प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन तक ही सीमित थी , लेकिन मुगलकाल में शिक्षा के विकास में नवीन प्रवृतियों का उदय हुआ। इस काल में अकबर ने शिक्षा में खगोल विज्ञान व गणित को अनिवार्य बना दिया।[1] मुगल काल में उच्च शिक्षा के भी प्रमाण मिलते हैं, स्नातक की परीक्षा को सलाका कहा जाता था। शैक्षणिक वाद-विवाद भी शिक्षा के अंग थे और जो किसी सभा में वाद-विवाद जीत जाता था उसे सरयंत्री की उपाधि दी जाती थी।[2]

मुगलकालीन शिक्षा

मुगल काल में मुस्लिमों को शिक्षा मकतब व मदरसे में दी जाती थी। प्राथमिक शिक्षा के लिए मकतब व उच्च शिक्षा के लिए मदरसे थे। मुगल शिक्षा का सर्वाधिक संस्थागत विकास अकबर के समय में देखा जा सकता है। अकबर के काल में ही उल्लेख मिलता है कि राजा जय सिंह ने बनारस में राजकुमारों की शिक्षा के लिए महाविद्यालय स्थापित किया। इसी महाविद्यालय का एक उत्पाद मिथिला का एक विद्यार्थी रघुनन्दन दास राय था , जिसने अकबर के कहने पर शास्त्रार्थ का दिग्विजय अभियान

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किया था और बादशाह ने प्रसन्न होकर सम्पूर्ण मिथिला नगर उसे भेंट दे दिया था। चिकित्सा विज्ञान की भी मुगल काल में खूब प्रगति हुई। सरहिंद आयुर्विज्ञान के अध्ययन का प्रमुख केंद्र था। अकबर के दरबार की अनेक विभूतियाँ शिक्षा के प्रसार लिए प्रयासरत थीं , जिनमें प्रमुख थीं अकबर की धाय माँ माहम अनगा। माहम अनगा द्वारा दिल्ली में बनाया गया खैर उल मंजिल प्रसिद्ध शिक्षा का केंद्र था। [3] अकबर के पश्चात शाहजहाँ ने दिल्ली में मदरसा दार उल बका का निर्माण करवाया। अबुल फजल ने फतेहपुर सीकरी में एक मदरसे का निर्माण कराया जिसके लिए अकबर ने कश्मीर के विद्वानों को धन देकर शिक्षा प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया था।

मुगल बादशाहों के अधीन बौद्धिकता का विकास

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर ने की थी। बाबर की ख्याति उसकी विद्वता से अधिक उसके रणकौशल के कारण है। भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने 'बाबरनामा' नाम की महत्वपूर्ण कृति की रचना की। इस कृति के कारण उसे 'जीवनी लेखकों का राजकुमार' कहा गया है। बाबर की साहित्यिक मेधा के हमें अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं। तुर्की में बाबर ने एक अनूठा काव्य संग्रह लिखा है जिसे 'दीवान' कहा जाता है। बाबर ने मुबाइयान नामक एक पद्य शैली को विकसित किया था और उसके खतों को रिसाल ए उसज नाम से संगृहीत किया गया , जिसका साहित्यिक महत्व है। बाबर भारत के बादशाह की उपाधि धारण करने वाला पहला मुगल शासक था। मुगल साम्राज्य की स्थापना में व्यस्त बाबर शिक्षा के प्रसार हेतु भी जागरूक था और उसने दिल्ली में एक मदरसे की स्थापना की।

हुमायूँ का भारतीय शासनकाल अस्थिर था और उसके जीवन का एक बड़ा हिस्सा निर्वासन में व्यतीत हुआ। इसके बावजूद उसने शिक्षा के प्रसार के लिए दिल्ली में एक मदरसे का निर्माण करवाया जिस में गणित , खगोल और भूगोल पढाया जाता था। हुमायूँ के के पास एक बड़ा पुस्तकालय भी था जिसे शेरमंडल कहा जाता था। इसी पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर हुमायूँ की मृत्यु हुई थी। कानून ए हुमा यूँ के अनुसार हुमायूँ खगोलशास्त्र व ज्योतिष पर रिक्त समय में शोध करता था। शेरशाह सूरी के काल में जौनपुर प्रमुख शैक्षणिक केंद्र के रूप में उभरा और शेरशाह स्वयं नारनौल में एक मदरसे के निर्माण के कारण जाना जाता है।

मध्यकालीन भारत में शिक्षा में चरम विकास अकबर के शासनकाल में दृष्टिगोचर होता है और आश्चर्यजनक तथ्य तो यह है कि अकबर स्वयं ही औपचारिक शिक्षा से वंचित था , लेकिन प्रज्ञा को संभवतः औपचारिकता की आवश्यकता नहीं होती। अकबर ने आधारभूत शिक्षा का स्तर ऊपर उठाने पर बल दिया और शिक्षा के व्यावसायिक स्वरूप को विकसित करने का प्रयास किया। जहाँगीर ने मुगल साम्राज्य की राजधानी आगरा को शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित किया। जहाँगीर ने एक राजाज्ञा जारी की 'उत्तराधिकार रहित सम्पत्ति से प्राप्त धन का उपयोग मदरसे के निर्माण में किया जाए।' शाहजहाँ ने उच्च शिक्षा के लिए दार उल बका नाम से दिल्ली में एक मदरसे का निर्माण करवाया। शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह और उसकी पुत्री जहांआरा व रौशनआरा अपने बौद्धिक उत्कर्ष व योगदान के लिए जाने जाते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एक तरफ जहाँ दाराशिकोह ने अनेक सनातन भारतीय संस्कृत ग्रंथों का फारसी अनुवाद करवाया वहीं जहांआरा ने जनता में उच्च शिक्षा के प्रसार के लिए दिल्ली में एक मदरसे का निर्माण कराया।

औरंगजेब के काल में मदरसा ए रहीमिया नामक मदरसे का निर्माण वलीउल्लाह के पिता शाह अब्दुलरहीम के नाम पर करवाया गया [4] और औरंगजेब ने राजकोष से छात्रों व शिक्षकों को आर्थिक सहायता प्रदान की। औरंगजेब की बेटी जेबुन्निशा ने दिल्ली में बैतूल उलूम नामक पुस्तकालय की स्थापना की।

मुगलकालीन साहित्य का विकास

हुमायूँ ने तुर्की भाषा में दीवान की रचना की। कानून ए हुमायूँ में लिखा है कि हुमायूं सप्ताह के हर दिन अलग रंग के कपडे पहनता था। हुमायूं ने इसके लेखक ख्वांदमीर को अमीर ए अखबार की उपाधि दी।[5] अकबर का काल मुगल साहित्य का स्वर्ण युग है। अकबर विद्वानों को आश्रय प्रदान करने के लिए जाना जाता है। आईने अकबरी में उन 59 कवियों का उल्लेख किया गया है जिन्हें अकबर का संरक्षण प्राप्त था। अबुल फजल व फैजी दो मूर्धन्य विद्वान अकबर के दरबार की शोभा थे। फैजी को अकबर ने मलिक उश शोअरा (कविराज) की उपाधि दी।6 मुल्ला गजली मशद्री अकबर का राजकवि था , जिसने मदद ए अनवर व मिरातुसंसफा की रचना की। जलालुद्दीन उर्फी अकबर के समय का कसीदाकार था। फैजी ने एक महान काव्य लिखा जिसका शीर्षक था 'तबाशिरू ए शुभ'। फैजी बाद में फैयाजी नाम से रच नाएँ करने लगा जिसका कारण वह अपनी प्रसिद्ध रचना नल व दमन में दैवीय प्रेरणा बताता है। कश्मीर के कवि मोहम्मद हुसैन को अकबर ने जरीकलम की उपाधि दी। अबुल फजल रचित 'अकबरनामा' में अकबर के शासनकाल के 46 वर्षों का इतिहास है। अकबर की सहिष्णुता का ज्ञान इससे होता है कि समकालीन लेखकों को उसकी आलोचना का भी अवकाश प्रदान किया जाता था। बदायुनी रचित मुन्तखब उत तवारीख अकबर के राज्यकाल का पहला क्रमबद्ध इतिहास है, जिसमें उसकी धार्मिक नीति की कटु आलोचना की गयी है।[7] निजामुद्दीन अहमद की तबकाते अकबरी को इसकी ऐतिहासिक विशेषता के कारण तारीख ए निजामी भी कहते हैं। एक और विद्वान अब्दुल हक देहलवी ने अपनी पुस्तक तारीख ए हकीकी में अकबर की धार्मिक नीति की आलोचना की है। जहाँगीर के काल के विद्वानों की विस्तृत सूची मोतमिद खां बख्शी द्वारा लिखित इकबालनामा ए जहाँगीरी में मिलती है। जहाँगीर के काल की प्रमुख रच नाएँ तत्कालीन इतिहास व बौद्धिकता की ज्वलंत मिसाल हैं, जिसमे मोतमिद खां द्वारा रचित 'इकबालनामा ए जहाँगीरी ', शेख अब्दुल वहाब की 'इन्तखाब ए जहाँगीरी', नियामत उल्ला की 'मकज्जम ए अफगानी ', मुल्ला नहबंदी की 'मस्सरे रहीमे' और कामदार खां की 'मासिर ए जहाँगीरी' शामिल हैं। तालिब अमूली जहाँगीर का राजकवि व प्रसिद्ध कसीदाकार था।

शाहजहाँ का राजकवि अबू तालिब कलीम था। इसके दरबार का विशुद्ध फारसी कवि था सैदाई गिलानी। एक अन्य कवि कसदी की रचना से खुश होकर शाहजहाँ ने उसे चांदी से तौलने का आदेश दिया था। इसके शासनकाल में चंद्रभान ब्राह्मण पहला हिन्दू कवि था जिसने अबुल फजल की शैली को समन्वित कर एक नयी शैली प्रस्तुत की, चार चमन। मुल्ला अमीन कजवीनी शाहजहाँ के समय का पहला सरकारी इतिहासकार था। अब्दुल हमीद लाहौरी शाहजहाँ का दरबारी

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इतिहासकार था। 17वीं शताब्दी के सबसे महान कवि तबरीजे के मिर्जा मुहम्मद अली थे , जो शाहजहाँ के काल में भारत आए और दो वर्ष तक भारत में ही रहे। शाहजहाँ ने उन्हें मुस्तैद खां की उपाधि दी।

औरंगजेब काल के साहित्यिक सृजन में इसके पत्रों का संकलन 'रुक्काते आलमगीरी ' का महत्वपूर्ण स्थान है। औरंगजेब ने इतिहास लेखन पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि इसे वह धन की बर्बादी मानता था, इसलिए तत्कालीन इतिहासकार खाफी खां ने अपनी पुस्तक 'मुन्तखब उल लुबाब' छिप कर लिखी।[8]

ऐसा नहीं कि औरंगजेब ने साहित्य को बिलकुल संरक्षण न दिया हो। औरंगजेब के आदेश तथा संरक्षण में मुस्लिम उलेमाओं की एक मंडली ने शेख निजामुद्दीन अहमद की अध्यक्षता में 'फतवा ए आलमगीरी' नामक वृहत संहिता की रचना की जो इस्लामी कानून पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसे भारत में रचित मुस्लिम कानून का सबसे बड़ा डाइजेस्ट (संक्षिप्त रूप) माना जाता है। [9] इसी काल की एक अन्य रचना साकी मुस्ताद खां की मआसिरे आलमगीरी को डॉ जदुनाथ सरकार ने मुगल राज्य का गजेटियर कहा है। इसके ही समय में संगीत से सम्बंधित ग्रन्थ 'तुहफतुल हिन्द' की रचना हुई। मुहम्मद काजिम शिराजी औरंगजेब काल का सरकारी इतिहासकार था जिसने 'आलमगीरनामा' की रचना की।

मुगलों का बौद्धिक योगदान

मुगलों में भारतीय संस्कृति व सभ्यता को समझने में अतुल्य योगदान यदि किसी ने दिया है तो वह है शाहजहाँ का उत्तराधिकारी दाराशिकोह। दाराशिकोह कादरी उपनाम से कवितायें लिखता था। अकबर का पुत्र दानियाल हिंदी का अच्छा कवि था। जहांआरा मखफी उपनाम से रचनाएँ लिखती थी। जेबुन्निशा द्वारा लिखित एक दीवान का नाम 'दीवान ए मखफी' है।

भारतीय आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विशेषताओं को समझने का मुगलों ने विशद प्रयास किया , क्योंकि वे भारत को अपनी मातृभूमि समझते थे। अकबर ने इस रणनीति के तहत फैजी के अधीन एक अनुवाद विभाग की स्थापना की। अकबर के समय में 'तुजुक ए बाबरी ' का दो बार फारसी अनुवाद हुआ। पहला अनुवाद पैदा खां व दूसरा अब्दुल रहीम खानेखाना ने बाबरनामा नाम से किया। फैजी ने संस्कृत ग्रन्थ लीलावती का फारसी अनुवाद किया जो 12वी सदी के लेखक भास्कर की रचना है। ज्योतिष ग्रन्थ ताजक का मुकम्मल खां गुजराती ने 'जहाँ ए जफर' नाम से फारसी अनुवाद किया। महाभारत का फारसी अनुवाद 'रज्मनामा' है, जिसे फैजी , मुल्लाशेरी, नकीब, सुलतान हाजी और अब्दुल कादिर बदायुनी ने संकलित किया।[10] रम्मनामा नाम से रामायण का फारसी अनुवाद बदायुनी व अन्य लेखकों ने किया। नाम ए खिराद अफजा नाम से बदायुनी ने सिंहासन बत्तीसी का फारसी अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त कथा सरितसागर का बदायुनी ने 'बहर अल असमार ' नाम से अनुवाद किया। टोडरमल ने भागवत पुराण का अनुवाद किया। इब्राहीम सरहिन्दी व बदायुनी ने अथर्ववेद का अनुवाद किया। अबुल फजल ने पंचतंत्र का फारसी अनुवाद 'अनवर ए सुहेली' नाम से किया। प्रसिद्ध संस्कृत रचना कालिया दमन का अनुवाद अबुलफजल ने 'यार ए दानिश ' नाम से किया। बाबर ने अपने गुरु उबैदुल्ला अहरारी के सम्मान में 'रिसाल ए वालिदियाँ' की रचना की। कादी ने कुरआन पर टीका लिखी। फैजी ने कुरआन का भाष्य स्वाती अल इल्हाम लिखा। दारा शिकोह ने

सफीनत उल औलिया, मज्म उल बहरैन की रचना की।[11] मुहसिनफानी ने दबिस्तान अल मजाहिब की रचना की। दारा शिकोह ने भगवतगीता व योगवाशिष्ठ का अनुवाद किया। शाहजहाँ के काल में 'शहीद ए सादिक ' नामक विश्वकोश का निर्माण हुआ , जो शाह शुजा को समर्पित है। शाहजहाँ के समय अबू तालिब ने तुजुके बाबरी का अनुवाद तुर्की भाषा से फारसी में किया।[12]

निष्कर्ष

मुगल शासन व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता हम पाते हैं धार्मिक सहिष्णुता , जो भारतीय सांस्कृतिक तत्वों को समझने के पश्चात मुगलों ने अपनी राजकीय नीतियों में समाहित किया। अकबर अपनी धर्म निरपेक्ष राजकीय नीतियों के लिए विख्यात है। यह धर्म निरपेक्षता भारतीय ज्ञान-विज्ञान के संपर्क में आने के पश्चात अकबर के मनस-पटल पर उदित होती है। मुगलों का भारतीयता के विकास में अहम् योगदान है। शासक वर्ग के पास तमाम संसाधन थे और इन संसाधनों का उपयोग उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्ञान के अथाह सागर के मंथन में किया जिससे अनेक मोती निःसृत हुए। मुगलों के संरक्षण में भारतीय कला, संस्कृति, स्थापत्य, साहित्य, संगीत का बहुआयामी उत्कर्ष दृष्टिगत होता है।

सन्दर्भ

1 यादव , महेंद्र, एजुकेशन इन मुगल पीरियड ड्यूरिंग अकबर रूल, 23 सितम्बर 2013 , वेब- http://www.importantindia.com/5096/education-in-mughal-period-during-akbar-rule/

2 पांडेय, एस.के., मध्यकालीन भारत , इलाहाबादरू प्रयाग प्रकाशन पृष्ठ, 610

3 रहमानी, अहमद, मस्जिद खैरुल मंजिल, द मिली गेजेट, जनवरी, 2002

4 देहलवी , सादिया, द सूफी कोर्टयाडरू दरगाह ऑफ देलही. हार्पर कोलिन्स, 1987 पृष्ठ- 234

5 मीर , खावंद, कानून ए हुमायूँ , कलकत्ता, एशियाटिक सोसाईटी, 1920ः पृष्ठ- 13

6 ब्लोक्मेन, एच. (अनुवाद) द आइन ए अकबरी बाय अबुल फजल अल्लामी, वोल्यूम 1, कलकत्ताः द

एशियाटिक सोसाइटी, 1993, पेज. 548-50

7 मजूमदार , आर.सी., द मुगल एम्पायर , मुंबईः भारती विद्या भवन, 2007, पृष्ठ- 6,7

8 अलमगीर औरंगजेब, हिस्टोरिकल डोक्युमेंटेशन, वेब. http://aurangzeb-org/history-htm

9 अहमद , एम बी. , द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जस्टिस इन मेडिवल इंडिया , अलीगढ यूनिवर्सिटी, 1941. पृष्ठ 73

10 मजूमदार, आर.सी., द मुगल एम्पायर , मुंबईः भारती विद्या भवन, 2007, पृष्ठ- 6,7

11 सि कंद, योगिंदर. दाराशिकोहज क्वेस्ट फॉर स्पिरिचुअल यूनिटी, वेब - http://www-svabhinava-org/MeccaBenares/YoginderSikand/DaraShikoh&frame-php

12 पांडेय, एस.के., मध्यकालीन भारत , इलाहाबादर : प्रयाग प्रकाशन पृष्ठ, 610

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 अहमद, एम बी., द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जस्टिस इन मेडिवल इंडिया, अलीगढ यूनिवर्सिटी, 1941.

2 अलमगीर औरंगजेब, हिस्टोरिकल डोक्युमेंटेशन, वेब. http://aurangzeb-org/history-htm

3 ब्लोक्मेन, एच. (अनुवाद) द आइन ए अकबरी बाय अबुल फजल अल्लामी , वोल्यूम 1, कलकत्ताः द एशियाटिक सोसाइटी, 1993,

4 देहलवी, सादिया, द सूफी कोर्टयाडरू दरगाह ऑफ देलही. हार्पर कोलिन्स, 1987

5 मजूमदार, आर.सी., द मुगल एम्पायर, मुंबईः भारती विद्या भवन, 2007

6 मीर, खावंद, कानून ए हुमायूँ, कलकत्ता, एशियाटिक सोसाईटीए 1920

7 पांडेय, एस.के., मध्यकालीन भारत , इलाहाबादरू प्रयाग प्रकाशन

8 रहमानी, अहमद, मस्जिद खैरुल मंजिल , द मिली गेजेट, जनवरी, 2002

9 सिकंद, योगिंदर. दाराशिकोहज क्वेस्ट फॉर स्पिरिचुअल यूनिटी, वेब - http://www-svabhinava-org/MeccaBenares/YoginderSikand/DaraShikoh&frame-php

10 यादव, महेंद्र, एजुकेशन इन मुगल पीरियड ड्यूरिंग अकबर रूल , 23 सितम्बर 2013 , वेब- http://www.importantindia.com/5096/education-in-mughal-period-during-akbar-rule/